वैश्वीकरण की दौड़ में संस्कृति तथा सभ्यता से अलगाव

प्रो0 निरंजना शर्मा
राजनीति शास्त्र विभाग
राजकीय महाविद्यालय
खाड़ी टि0ग0
ईमेलः dr.niranjanasharma@gmail.com

सारांश

वैश्वीकरण ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा विश्व के सभी देशों की अर्थव्यवस्था का एकीकरण किया जाता है। एक देश जब अन्य देशों से व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित करता है तथा अपनी अर्थव्यवस्था को विश्व के अन्य देशों की अर्थव्यवस्था के लिए खोल देता है ताकि वस्तुओं का आदान–प्रदान हो सके, वैश्वीकरण, उदारवाद अथवा भूमण्डलीयकरण कहलाती है। इसमें पूंजी, वस्तु, प्रौघोगिकी तथा श्रम का प्रवाह एक देश से दूसरे देश में आसानी से होता है वैश्वीकरण के मूल रूप से तीन प्रकार है– राजनीतिक, आर्थिक तथा सास्कृतिक। वैश्वीकरण एक जटिल और बहुआयामी घटना है जो विश्व के विचारों उत्पादों व संस्कृति के अन्य पहलूओं के आदान–प्रदान को उत्पाद के रूप में अन्तर्राष्ट्रीय एकीकरण की प्रक्रिया में सम्मिलित करती है जिसमें राष्ट्रीय और सांस्कृतिक संसाधनों का विश्वव्यापी आदान प्रदान होता है। इसके विकास में योगदान देने वाले महत्वपूर्ण कारक संचार व परिवहन है वैश्वीकरण की वर्तमान लहर वस्ताव में अर्थव्यवस्था के विभिन्न स्तरों पर राजनीतिक अभिनेताओं पूंजीपतियों तथा उघोगपतियों की बातचीत के साथ–साथ ***प्रौघोगिकी शुम्पीटेरियन विकास*** *का परिणाम है।*

Reference to this paper should be made as follows:

Received: 15.01.2025
Approved: 18.03.2025

प्रो0 निरंजना शर्मा

वैश्वीकरण की दौड़ में संस्कृति तथा सभ्यता से अलगाव

RJPP Oct.24-Mar.25,
Vol. XXIII, No. I,
Article No. 8
Pg. 70-75

Online available at:
https://anubooks.com/journal-volume/rjpp-sept-2025-vol-xxiii-no1

वैश्वीकरण को पष्थक मानदण्डों से स्पष्ट किया जा सकता हैं सकारात्मक राजनीतिक और तकनीकी वैश्वीकरण समाज में सम्पन्नता, रोजगार तथा सहयोग का प्रतिक है जबकि नकारात्मक अर्थ में वैश्वीकरण आधिपत्य स्थानीय व राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं का विरोधी है। वैश्वीकरण ने स्थितियों को इस तरह बदला है कि **राज्य की शक्ति फर्म की शक्ति** से निर्धारित होती है। यद्यपि वैश्वीकरण का लक्ष्य वस्तुओं, सेवाओं, श्रम, विचारों आदि का उदार आदान प्रदान था, जो बाद के चरणों में विश्व को एक समान बना देगा,किन्तु अब पहचान के लिए कोई जगह नही है। यह विचलन तथा अभिसरण के बारे में बहस नहीं है, वरन एक द्वद्वांत्मक प्रक्रिया है जो विजेता और हारने वाले दोनों को बनाने के साथ–साथ एकीकष्त और खडित कर सकती है। अतः आने वाले समय में वैश्वीकरण का एक नकारात्मक पहलु होगा जिसका प्रभाव विकासशील देशों पर व्यापक रूप से दिखेगा क्योंकि द्वितीय विश्व के युद्व के बाद की परिस्थितियों में इसे आर्थिक उपनिवेशवाद की संज्ञा दी जा सकती है, जिसमें तष्तीय विश्व के देशों का आर्थिक, सामाजिक व सांस्कष्तिक शोषण तो है ही साथ ही विकासशील देशों में बढ़ते आर्थिक संकट, गरीबी व वर्ग विभेद भी इसी क्रम में सम्मिलित है **समाजशास्त्रीय रोलैंड रॉबर्टसन** का तर्क है कि "वैश्वीकरण में रूची समाज की बीच एक विभाजन से उत्पन्न हुई जो समाजो के साथ तुलानात्मक रूप से व्यवहार करती है तथा अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों और राजनीतिक विज्ञान जैसे विषयों के साथ अंतःक्रियात्मक रूप से निपटती है।"

वर्तमान में वैश्वीकरण के कुटीर उघोग धधों के पतन के साथ–साथ रीतिरिवाज, परम्पराओं, प्रथाओं व सास्कंष्तिक संरचना पर कुठराघात तथा आर्थिक गतिविधियों के साथ विदेशी कम्पनियों का वर्चस्व, रहन–सहन मे बदलाव, युवा पीढ़ी पर पश्चात्य संस्कष्ति का प्रभाव आदि कारक महत्वपूर्ण हैं यद्यपि इससे रूढ़िवादिता समाप्त हो रही है व महिलाओं की स्थिति में भी सुधार हुआ है किन्तु वह बाजारवाद के प्रभाव से मुक्त नही है। भारत की संस्कष्ति व सभ्यता विश्व के लिए सदैव से आदरणीय रही है किन्तु वर्तमान परिप्रेक्ष्य में नैतिक व सामाजिक मूल्यों के आधार पर कही कहीं क्षत विक्षत होती जा रही है अतः यह एक विचारणीय प्रश्न है जिसे मैनें अपने शोध पत्र के माध्यम से प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है।

शिक्षा व जीवन अन्योन्याश्रित है। शिक्षा जीवन है तथा जीवन शिक्षा है, जीवन की कल्पना शिक्षा के बिना अधुरी है जीवन की दो आवश्यकताये है व्यक्तिगत तथा सामाजिक। व्यक्तिगत आवश्यकताओं में शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक, चारित्रिक आध्यात्मिक व सांस्कृतिक तथा सामाजिक आवश्यकताओं में पारिवारिक, सामाजिक राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय आवश्यकतायें सम्मिलित हैं। शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है जिसका तात्पर्य है शिक्षा समाज में, समाज के लिए तथा समाज द्वारा संचालित एक प्रक्रिया है। शिक्षा का स्वरूप, शिक्षा की प्रकृति, शिक्षा के उद्देश्य समाज के स्वरूप, समाज की प्रवृत्ति तथा समाज में उद्देश्यों पर निर्भर करते है। **माग्रेड मीड** ने स्पष्ट किया है कि शिक्षा वह सांस्कृतिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा प्रत्येक नवशिशु मानव समाज का पूर्व अध्ययन करता है। शिक्षा का प्रावधान समाज की आवश्यकाताओं, आकांक्षाओं व आर्दशों के आधार पर होना आवश्यक है। सामाजिक गुणों के विकास से युक्त शिक्षा कत्तव्यों का पालन, अधिकारों का उपभोग, समाज व देश के योग्य, कुशल, जागरूक, नागरिक बनने की प्रेरणा देती है, शिक्षा के उद्देश्यों के निर्धारण का आधार समाज का जीवन, दर्शन, समाज की संरचना और उसकी धार्मिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक व आर्थिक स्थिति होनी चाहिए। शिक्षा प्रक्रिया के तीनों अंग– शिक्षार्थी, शिक्षा व पाठ्यक्रम अत्यन्त

महत्वपूर्ण है। "जिस सामाजिक वातावरण में मनुष्य अपने व्यक्तित्व का विकास करता है उससे पृथक होने पर उसके व्यक्तित्व का कोई मूल्य नहीं रह जाता व्यक्ति व समाज एक दूसरे के पूरक है तथा एक दूसरे पर निर्भर हैं। शिक्षा के द्वारा दोनों का हित साधन होना चाहिए। शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति से व्यक्ति के अन्दर ऐसे गुण, क्षमतायें व योग्यतायें पैदा की जानी चाहिए, जिससे वह समाज का हित कर सके। यही शिक्षा के सामाजिक मूल्य है।"

वर्तमान सामाजिक, सांस्कषतिक, आर्थिक तथा राजनीतिक परनिर्भरता ने एक ऐसी नई परिकल्पना को जन्म दिया है। जिसमें न सिर्फ विभिन्न देश एक दूसरे के निकट आ रहे हैं, बल्कि उनकी पारस्परिक निर्भरता भी बढ़ रही है। वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने भौगोलिक दबावों को काफी कमजोर किया है। इस प्रक्रिया के परिणामस्वरूप हुए उदारीकरण और निजीकरण ने समाज के आर्थिक और सांस्कषतिक ढाँचे को बहुत गहराई से प्रभावित किया है। सामाजिक, सांस्कषतिक और आर्थिक वैश्वीकरण को मुख्य रूप से संचार प्रौघोगिकी में हुई प्रगति के माध्यम से देखा जा सकता है। सामाजिक–संरचनात्मक रूप से यदि हम देखें तो वैश्वीकरण एक प्राक्–औघोगिक से उत्तर–औघोगिक और अन्तिम रूप से सूचना समाज में रूपान्तरण की प्रक्रिया है।आज दुनिया में व्यक्ति से व्यक्ति, व्यक्ति से समूह, समूह से समाज, समाज से राष्ट्र तथा राष्ट्र से अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर संचार सम्पर्क वैश्विक रूप से सम्भव हो गया है।इस बात के पर्याप्त साक्ष्य है कि इलेक्ट्रॉनिक जनसंचार माध्यमों ने आर्थिक व द्वि–व्यापार, बैकिंग सेवाओं तथा स्वास्थ्य, प्रबंधन और व्यवसायों से जुड़ी सूचनाओं में क्रांतिकारी परिवर्तन उत्पन्न किया है। इसने विकास की नयी सम्भावनाओं को जन्म दिया है। निरन्तर संचार सम्पर्कों के माध्यम ने दूरस्थ फैले समुदायों में सम्बन्धों को प्रगाढ़ किया है। लोगों के मध्य सांस्कषतिक और भावनात्मक बन्धन अधिक मजबूत हुये हैं। वैश्वीकरण की इस प्रक्रिया ने युवाओं के समक्ष सामाजिक, सांस्कषतिक और आर्थिक क्षेत्रों में नये अवसर उपलब्ध किये हैं। आर्थिक क्षेत्र मे विकसित हो रहे क्षेत्रों का विकल्प भी उपलब्ध कराया है। ऐसा नहीं है कि वैश्वीकरण की इस प्रक्रिया ने युवाओं के लिए सिर्फ नयी सम्भावना का द्वार ही खोला है, बल्कि इस प्रक्रिया ने युवाओं के समक्ष नई चुनौतियों और संकट भी उत्पन्न किये हैं।

वैश्वीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से पूंजी की संचरणशीलता बढ़ी है, वस्तुओं और सेवाओं का एक स्थान से दूसरे स्थान को जाने का मार्ग प्रशस्त हुआ हैं। विभिन्न देशों के मध्य संवाद, सम्पर्क, श्रम का आवागमन और मुश्किल हुआ है। अमेरिका और अन्य युरोपीय राष्ट्रों ने एक सीमारहित विश्व बड़े हिमायती अमेरिका ने एच–1 बी वीजा धारकों को अपने यहां से बाहर का रास्ता दिखाना शुरू कर दिया है। यह भारतीय श्रम की संचरणशीलता के प्रति अमेरिका असहिष्णुता का दुष्टान्त भर है, इसके अतिरिक्त अन्य बहुत से छद्म उपायों के माध्यम से श्रम के आवागमन को हतोत्साहित करने का प्रयत्न भी चलता रहता है। यह सच है कि वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप देश में कुछ नये प्रकार के रोजगारों का सृजन हुआ है। बी0पी0ओ0, के0पीओ0 तथा कॉलसेन्टरों आदि में युवा नौकरियों पा रहे हैं, लेकिन उनकी संख्या कितनी है?इस प्रश्न का उत्तर संतोषजनक नहीं है। नेशनल सैम्पल सर्वे ऑर्गनाइजेशन द्वारा जारी रिपोर्ट के अनुसार भारत में बेरोजगारी की दर जो वर्ष 1999–2000 में 7. 31 प्रतिशत थी सरकारों की आर्थिक नीतियों तथा निर्णयों से बीते दशकों में इसमें समय–समय पर अनेक उतार चढ़ाव आये है। आर्थिक नीतियां कमजोर होने के बाद भी किसी भी समय सेन्सैक्स का

अचानक तीव्र गति से बढ़ना इस बात का सूचक है कि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी आर्थिक संकल्पनाओं को किस तरह देखा जा सकता है। वैश्वीकरण की प्रक्रिया का जितना लाभ युवाओं को मिलना चाहिए था, नहीं मिल रहा है। इसकी मुख्य वजह है कि पूंजी और संचरणशीलता में तो वृद्धि हुई, परन्तु श्रम का आवागमन निर्बाध रूप से नहीं हो पाया।

वास्तव में रोजगार के ज्यादातर अवसर छोटे उद्यमों के माध्यम से ही पैदा होते हैं और वे आज हर स्थान पर संकट के दौर से गुजर रहे हैं। वैश्वीकरण के इस युग में बहुराष्ट्रीय निगमों के वर्चस्व ने छोटे उद्यमों के अस्तित्व को खतरे में डाल दिया हैं। दूसरी तरफ शिक्षित बेरोजगारों की संख्या में बेतहाशा वषद्धि हो रही है। सरकारी सेवाओं मे नौकरियों का प्रतिशत लगातार गिरावट की ओर है। विभिन्न विभागों में मशीनीकरण के चलते रोजगार के अवसर घट रहे हैं, परन्तु इसी के साथ–साथ वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप आर्थिक समषद्धि अर्जित करने वाले वर्ग के अनुकरण के प्रति युवाओं में आर्कषण बढा है। उपभोक्तावाद के चरम सुख को प्राप्त करने की लालसा बढ़ रही है। सुख समषद्धि और उपभोग की ललक शिक्षित बेरोजगार युवकों को शार्टकट अपनाने को प्रेरित कर रही है। इस तरह से युवा अपराध ा के रास्ते पर जा रहे हैं। वास्तव में जब युवाओं को अपनी योग्यता और क्षमता के अनुसार रोजगार नहीं उपलब्ध होंगे तो वे अपनी उपभोग की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए इसी तरह के विकल्प चुनेंगे। **पाकिस्तानी चिंतक अली** ने नवउदारवाद के अपनाये जाने से सम्प्रदायवाद और धार्मिक उन्माद के बढ़ने की बात को रेखांकित किया है। बहुराष्ट्रीय निगमों, बी0पी0ओ0, के0पी0ओ0 तथा कॉलसेन्टरों में जिन युवाओं को नौकरियाँ मिल भी रही हैं उनके पास परिवार और यहां तक कि अपने लिए भी समय नहीं है। कम्पनियॉ मोटे वेतन पर जिन युवाओं को काम पर रखती हैं उनसे 10 से 14 घंटे तक काम ले रही हैं। युवाओं का इसके बहुत खतरनाक नतीजे भुगतने पड़ रहे हैं। देश की राजधानी में हुए हाल के एक शोध से पता चला है कि तनाव, अनिद्रा, हदयरोग और मधुमेह के जो रोगी चिकित्सकों के पास आ रहे है, उनमें से ज्यादातर लोग 35 वर्ष से कम उम्र के हैं।

वैश्वीकरण ने युवाओं के समक्ष एक बहुत बड़े संकट के रूप में पहचान का संकट उत्पन्न किया है। वैश्वीकरण का लक्ष्य विश्व में सांस्कषतिक स्वायत्तता के महत्व को कमजोर करता है। दरअसल इस प्रक्रिया में वर्चस्वशाली संस्कषति का आक्रामक रूप उभरता है। ताकतवर की संस्कषति कमजोर की संस्कषति को हजम कर जाती है, परन्तु कमजोर की संस्कषति ताकतवर की संस्कषति को हजम नहीं कर पाती, वह पीड़ित व क्षुब्ध होकर मर जाती है। आज युवा वैश्वीकरण प्रक्रिया के अन्तर्गत इसी सांस्कषतिक द्वन्द्व से गुजर रहा है।वैश्वीकरण की प्रक्रिया पूरी दुनिया में एक–सी विशेषताएं उत्पन्न कर रही है। यह क्षेत्रीय विशिष्टताओं और विविधताओं को नष्ट करके उनमें समरूपता ला रही है। पश्चिमी संगीत, नष्त्य के समक्ष हमारे भारतीय संगीत, नष्त्य और साहित्य का आकर्षण युवाओं में अपना असर खो रहा है। लोक संस्कषति, नष्त्य कला, संगीत आज गंभीर संकट के दौर से गुजर रहे है। जातीय या एथनिक पहनावा आज सांस्कषतिक समरूपता की भेंट चढ़ रहा है। युवक–युवतियाँ आज दोनों ही नाइट क्लबों में जाते हैं। ये मिनी स्कर्ट, जींस तथा अंगप्रदर्शन करने वाले नये परिधान धारण करते हैं– इसमें उचित अनुचित का प्रश्न नहीं है, वस्तुतः वैश्वीकरण ने युवाओं के समक्ष पहचान का एक बहुत गम्भीर संकट उत्पन्न किया है। युवा पश्चिमी या कहिये कि अमेरिकी संस्कषति के अंधानुकरण में लगा है। उसके समक्ष बाजार ने एक ऐसे कल्पना जगत की सषष्टि की है कि वह अपनी मौलिक पहचान ही विस्मष्त कर गया है।

अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन द्वारा वैश्वीकरण के सामाजिक आयाम पर गठित विश्व आयोग ने 2022 में अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए कहा कि वैश्वीकरण का स्थानीय या देशी परिप्रेक्ष्य से कोई लेना–देना नहीं है। वह चरम निर्धनता के बीच उपभोक्तावाद को बढ़ावा देना चाहती है। सड़क, यातायात और संचार साधनों के विस्तार ने जीवन शैली और उपभोग प्रतिमानों के विभिन्न स्तरों में परिवर्तन किया है।रूचियों और उपभोग प्रतिमानों में समरूपता उत्पन्न हुई है। चाय, कॉफी, अण्डे, मांस और मछली की लोकप्रियता बढी है। आज भारत के युवाओं में मांसाहार, धुम्रपान और मद्यपान बढ़ रहा है।

उपभोग और जीवन शैली में परिवर्तन बाजार की शक्तियों के प्रेरणा से और तेजी पकड़ रहा है। बाजार ही वह व्यापक माध्यम है, जिसके द्वारा वैश्वीकरण का विस्तार हो रहा है। एक नये उपभोक्ता समाज का उदय हो रहा है। आज का युवा इस उपभोक्तावाद की चपेट में है। वैश्वीकरण ने जिस उपभोग समाज का निर्माण किया है, उसमें वस्तुओं का उपभोग उसकी उपयोगिता या जरूरतों के हिसाब से नहीं होता। यह उपभोग मूलतः प्रतीकात्मक होता है। आज युवाओं को जितने की आवश्यकता है, वे मात्र उतनी ही वस्तुओं से काम नहीं चला रहे हैं। शायद समस्त खरीदी गयी वस्तुओं के उपभोग का समय भी युवाओं के पास नहीं है। कोई यह नहीं देखता कि उसे अमुक वस्तु की आवश्यकता है या नहीं, परन्तु क्योंकि एक तरह की वस्तुएं लोगों की जीवन शैली में सम्मिलित हो गई है, अतः लोग इनका उपयोग कर रहे हैं।दरअसल यह उपभोग वास्तविक कम और प्रतीकात्मक अधिक है। वैश्विक ब्रांड से जुड़ने के भ्रम में ही युवा उपभोग की वस्तुओं के पीछे भाग रहे हैं। उपभोग संस्कृति में उपभोग करने की प्रवृत्ति व्यक्ति को अपनी अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान करती है। इससे उसकी पहचान बनती है। आज का युवा उसी पहचान के लिए उपभोक्तावाद का अंधानुकरण कर रहा है। **फ्रांसीसी विचारक ज्यां बौड्रिलार्ड तथा उनसे पहले अमेरिकी विद्वान थार्सटीन बेबलिन** ने भी वस्तुओं के उपयोग मूल्य के स्थान पर उनके प्रतीक मूल्य के आधार पर उपभोग की बात की थी। आज का युवा इस प्रतीक मूल्य के आधार पर उपभोग कर रहा है।

वैश्वीकरण के इस वर्तमान युग में बाजार लोगों की आवश्यकता पूर्त्ति का माध्यम नहीं है, बल्कि यह पूजीं के कुटिल अर्थतन्त्र का विस्तार है। पहले के बाजार–हाट, साप्ताहिक या मासिक हुआ करते थे, जहां व्यक्ति अपनी जरूरत की वस्तुओं के क्रय या विनियम के लिए एकत्र होते थे, परन्तु आज बाजार की परिभाषा और तर्क दोनों ही बदल गये हैं। बाजार आज लोगों की आवश्यकता पूरी करके उन्हें सन्तुष्ट नहीं करता। बल्कि, उनमें बाजार के प्रति आकर्षण जगारक नयी जरूरतें पैदा करके उन्हें सन्तुष्ट नहीं करता। इस तरह वही उनके अन्दर एक तरह की असंतुष्टि का भाव जगाता है। युवा इस बाजार के लिए ऐसा उपभोक्ता है, जिसके बहुत लम्बे समय तक इस उपभोग प्रक्रिया में बने रहने की सम्भावना है। अतः वैश्वीकरण का यह बाजार युवाओं को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए तमाम तरह के प्रलोभन की सषष्टि करता है। कम्पनियाँ विज्ञापनों के माध्यम से युवा के समक्ष उसकी एक आभासी छवि प्रस्तुत करती है, जो कि उनकी वास्तविक छवि से मेल नहीं खाती। इस आभासी छवि को प्रस्तुत करने के लिए तमाम उत्पादों का विकल्प ये कम्पनियाँ देती हैं। युवाओं की वास्तविक छवि में लगातार कुछ–न–कुछ सुधार की गुंजाइस बताकर उसे आभासी छवि के सन्निकट पंहुचने को प्रेरित किया जाता है। युवा इस आभासी छवि को प्राप्त करने के पीछे भागता रहता है। किसी साबुन, क्रीम, पैन्ट, शर्ट, बाइक या घड़ी का प्रयोग करता युवा इस आभासी छवि को प्राप्त करने का प्रयास करता दिखाई पड़ता है।

वैश्वीकरण की संस्कषति उपभोक्तावादी है जिसमें उपभोग ही जीवन का मूल्य है पूजीवादी संस्कषति इसके प्रचार का कारण ही इस संस्कषति ने वैश्वीकरण स्वरूप ग्रहण किया है संगीत व विलाप एक दूसरे से सहज हो रहे कि उनके मध्य भेद करना असम्भव है।इस संस्कषति का अनुकरण करने वाले युवाओं के लिए स्थानीय जीवन शैली, बोली भाषा, पारम्परिक वेष–भूषा नष्त्य संगीत पिछड़ेपन का प्रतीक है सांस्कषतिक क्षेत्र में युवाओं के समक्ष वैश्वीकरण ने नई चुनौतियां पैदा की है। जीवन क्षेत्र में ऐसे रोल–मोडल है जिनके यथार्थ जीवन में उनकी बाह्य छवि का कोई तालमेल नहीं है। वे उन्हें ही आदर्श विभुतियां मानते है। यद्यपि वैश्वीकरण के समर्थकों का दावा है कि इससे आय का अभिसरण होगा, ज्ञान, औघोगिकी तथा प्रोद्योगिकी तक पहुचं, उपयोग शक्ति, जीवन स्तर और राजनीतिक विचार, इसके अतिरिक्त अर्थव्यवस्थाओं के एकीकरण से आर्थिक विकास ओर धन में वषद्धि होगी। आलोचकों का तर्क है कि यह आधिपत्य है गरिबों व कमजोरों का विरोधी है। स्थानीय, राष्ट्रीय, आर्थिक समुदायों व पर्यावरण को कमजोर कर रहा है। वैश्वीकरण को दुनिया के बीच बढ़ते आर्थिक एकीकरण व बढ़ती आर्थिक अन्योन्याश्रिता के साथ चिन्हित किया गया है। वैश्वीकरण अपनी प्रगति की और प्रगतिशील है। इसलिए अंतिम परिणाम की भविष्यवाणी नही की जा सकती किंतु यह स्पष्ट है कि वैश्वीकरण का दुनिया भर में समाज के उपर व्यापक प्रभाव है। युवाओं के समक्ष जहां चुनौतियां उत्पन्न की है वही सम्पन्नताओं के द्वार भी खोले है। विभिन्न प्रतिवन्धों के बाद भी युवाओं के लिए देश के भीतर व बाहर अपार सम्भावनायें है। राष्ट्र राज्य की सीमाओं से उपर विश्व चेतना की एक समझ पैदा हुई है।विश्व परिदष्श्य पर भारतीय युवा एक वैश्विक युवा की छवि के साथ दस्तक दे रहा है। यद्यपि इस प्रक्रिया में अनेकों चुनौतियां ओर संकट भी है।

सन्दर्भ

1. सिंह, योगेन्द्र, कल्चर चंज इन इण्डिया, रावत पब्लिकेशन्स
2. अली, तारिक, द क्लैश ऑफ फंडामेंटलिज्मः कूसेड्स जिहाद एण्ड मौडर्निटी।
3. सिंह, के0एस, पीपुल ऑफ इण्डियाः एन इन्ट्रोडक्सन, एन्थ्रोपोलोजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया, कोलकाता।
4. शर्मा, रामविलास, भाषा और समाज, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. Human Rights Initiative vol.-2 June & December,2010